अतीक़ रहीमी
के अफ़ग़ान उपन्यास
का हिंदी अनुवाद

संगे-सबूर

(सब्र का पत्थर)

अनुवादः

अर्जुमंद आरा

संगे-सबूर

(सब्र का पत्थर)

अतीक़ रहीमी *के अफ़ग़ानी उपन्यास का अनुवाद*

अंग्रेज़ी से अनुवाद

अर्जुमंद आरा

यह कहानी नादिया अंजुमन की याद में लिखी गई -

नादिया एक ऐसी अफ़ग़ान शायरा थी

जिसे उसके पति ने बेदर्दी से क़त्ल कर दिया.

एम. डी. के नाम!

जिस्म की जानिब से, जिस्म के ज़रिये,

जिस्म के लिए, जिस्म के साथ,

जिस्म से शुरू होकर

और जिस्म की हद तक!

- अनतोनन आरतो

फ़्रांसीसी लेखक और कलाकर्मी

परिचय

अपने बचपन में कला और साहित्य के वसीले से हम किस अफ़ग़ानिस्तान को जानते थे? कौन सा पठान घर-घर की जानी पहचानी शख्सियत था? अफ़ग़ानिस्तान से आने वाला यह पठान रवीन्द्रनाथ टैगोर का 'काबुलीवाला' था, और फ़िल्म 'ज़ंजीर' का शेर ख़ान (प्राण), जिसके नज़दीक 'यारी है ईमान मेरा यार मेरी ज़िंदगी...' ही जीने का बुनियादी उसूल था. बेवक़ूफ़ी की हद तक सच्चा, खरा, बहादुर और अपने क़ौल के लिए जान तक दे देने वाला यह अफ़ग़ान पठान हिन्दोस्तान में पुरानी फ़िल्मों, कहानियों और लतीफ़ों का बहुत जाना-पहचाना पात्र है.

लेकिन ऐसा क्या हुआ कि नब्बे की दहाई में सब कुछ बदल गया. बामियान में बुद्ध की विशालकाय मूर्ति को उधर तालिबान ने ध्वस्त किया और हमारी पीढ़ी के लिए यह अफ़ग़ान एक रुढ़िवादी बुनियाद-परस्त और अतिवादी जिहादी बन गया. नाइन-इलेवन के बाद सारी दुनिया में बच्चे-बच्चे के लिए वह बुराई की अलामत बन कर मशहूर हो गया. सिनेमा में आज यही अफ़ग़ान 'काबुल ऐक्सप्रेस' और 'विश्व रूपम' का आतंकवादी बन चुका है. अनगिनत कहानियों, उपन्यासों और फ़िल्मों का विलेन. अफ़ग़ान करैक्टर की इन दो सीमाओं के बीच में क्या कोई और भी सच्चाई मौजूद है? यह क्योंकर मुम्किन है सुबह के बाद रात हो जाये, सूरज उगने के बाद न खड़ी दोपहर हो, न ही शाम की लालिमा. बस घटा-टोप काली रात चली आए.

इन दो ध्रुवों के बीच में अफ़ग़ानिस्तान की हक़ीक़त को अगर हम वाक़ई जानना चाहते हैं तो हमारे पास एक ही तरीक़ा है कि उनको और उनकी ज़िंदगी को सीधे क़रीब से देखने की कोशिश करें. यह हम इस देश के अवाम, लेखक, पत्रकार, शायरों और कहानीकारों से, आर्टिस्टों और फ़िल्म निर्माताओं से जान सकते हैं जिन्होंने पिछले तीस पैंतीस साल में अफ़ग़ानिस्तान को भयानक ऐतिहासिक-राजनीतिक तबदीलियों से गुज़रते देखा है. मुसलसल जंग और गृह-युद्ध से जूझते देखा है. इस आपातकाल में वहां के लोगों के जान-ओ-माल, तहज़ीब-ओ-तमद्दुन की ऐसी हानि देखी है जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती. आर्थिक संकट में घिरे होने की हर मुसीबत को उसने झेला है. इन सामूहिक और निजी त्रासदियों ने बहुत से लोगों को लिखने पर उकसाया. उनकी तहरीरें अफ़ग़ानिस्तान में तबाही-बर्बादी, और इन्सानी क्षति की जो दिलदोज़ और दिलसोज़ दास्तानें सुनाती हैं, ये वही

हैं जो युद्ध जन आपदाओं का शिकार बेबस अवाम दुनिया के हर क्षेत्र में हर ज़माने में बर्दाश्त करते रहे हैं. और ये कहानियां एक बार फिर जंग के जब्र और निरर्थकता को रेखांकित करती हैं.

नाइन-इलैवन के बाद एक अफ़ग़ान अमरीकी लेखक तमीम अंसारी ने अपने उपन्यास West of Kabul, East of New York में लिखा था:

When you think 'Taliban', think 'Nazis'. When you think 'Bin Laden', think 'Hitler'. And when you think 'the People of Afghanistan', think 'the Jews in the concentration Camps.

उसने ये भी लिखा कि हर कोई अफ़ग़ानिस्तान की ईंट से ईंट बजा कर उसे स्टोन-एज में पहुंचाने की बात कर रहा है, लेकिन दिक़्क़त की बात यह है कि यह काम तो सोवियत पहले ही कर चुके हैं. उनको मुसीबत और यातना देनी चाहिए? वे तो पहले ही मुसीबत में मुबतला हैं. उनके घर तोड़ कर मैदान बना दें? वो हो चुके. उनके स्कूल खंडहरों में बदल दें? वे भी हो चुके. उनके हस्पताल नीस्त-ओ-नाबूद कर दिए जाएं? वे भी हो चुके. उनका इंफ्रास्ट्रक्चर बर्बाद कर दिया जाये? उनको दवाएं और सामान-ए-राहत की स्पलाई रोक दी जाये? बहुत देर हो चुकी भई... किसी और ने यह सब पहले ही कर दिया है. अब अगर बम गिरेंगे तो बमों के मलबे पर ही गिरेंगे. (पृष्ठ 290-91)

इसी बर्बाद हो चुके अफ़ग़ानिस्तान की पैदावार है अतीक़ रहेमी और इस जैसे दूसरे अफ़ग़ान अदीब.

काबुल के एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी के घर में 1962 में जन्मे अतीक़ रहीमी की प्रारंभिक शिक्षा "लायसी इस्तक़लाल" में हुई. अफ़ग़ानिस्तान में सोवियत रूस के हस्तक्षेप के बाद उन्हें एक साल के लिए पाकिस्तान में शरण लेनी पड़ी, और फिर 1985 में उन्हें फ़्रांस में राजनीतिक शरण मिल गई.

सोरबोन में शिक्षा पूरी करने के बाद रहीमी ने फिल्म-लेखन, फिल्म-निर्माण, चित्रग्राफ़ी और निर्देशन को अपने करियर के रूप में चुना. नब्बे के दशक में उन्होंने लिखना शुरू किया और दरी (फ़ारसी) में उनकी पहली रचना "ख़ाकिस्तरो-ख़ाक" (राख और ख़ाक) साल 2000 में प्रकाशित हुई जो जल्द ही यूरोप और दक्षिणी-

अमेरिका में बेस्ट-सेलर बन गई. अतीक़ रहीमी के निर्देशन में इस उपन्यास पर बनी फ़िल्म Earth and Ashes पचास से अधिक फ़िल्मी मेलों में दिखाई गई और उसने पच्चीस पुरस्कार प्राप्त किए जिनमें Cannes Film Festival 2004 का Prix du Regard vers l"Avenir और ज़नजीबार अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का Golden Dhow सम्मान भी शामिल हैं.

2002 में तालिबान की हार के बाद अतीक़ रहीमी सत्रह साल के निर्वासन के बाद अपने देश लौटे और डेढ़ सौ साल पुराने बॉक्स कैमरा में काबुल की तस्वीरें क़ैद कीं. इनमें से छह तस्वीरें लंदन के विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय ने भी खरीदीं.

2008 में रहीमी का पहला फ़्रांसिसी उपन्यास "संगे-सबूर" (Syngue Sabour) प्रकाशित हुआ और उसने फ़्रांस का सबसे प्रतिष्ठित सम्मान Prix Goncourt Award प्राप्त किया.

अफ़ग़ानिस्तान की पृष्ठभूमि में लिखे गए इस उपन्यास में एक ऐसी औरत की कहानी बयान की गई है जिसका पति गर्दन में गोली लगने के कारण कोमा में चला गया है और सांस लेते हुए लेकिन पत्थर की तरह बेजान पति की सेवा में लगी उसकी पत्नी अपने सारे दुख-दर्द, ख़्वाहिशें-हसरतें, घटनाएँ और दुर्घटनाएं उसके पास बैठी उससे बयान करती रहती है, और अपने नौ वर्ष के विवाहित जीवन में पहली बार वह अपने पति से सीधे इस तरह संबोधित होती है कि अपनी मानसिक दशाओं और जीवन की परिस्थितियों को डरते-डरते और क्रमश: बयान करती है, इस उम्मीद में कि उसका "संगे-सबूर" उसके सभी कष्ट सोख लेगा और उसे अपने दुखों से मुक्ति मिल जाएगी. "संगे-सबूर" के अंग्रेज़ी संस्करण के परिचय में उपन्यासकार ख़ालिद हुसैनी ने लिखा है:

"इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने आवाज़ दी है. उन्हें स्वर प्रदान किया है जो सबसे अधिक कष्ट सहती हैं और कभी शिकायत का कोई शब्द ज़बान पर नहीं लातीं. रहीमी की बेनाम नायिका एक स्रोत है, एक जीवित उपकरण, जिसमें उस जैसी करोड़ों औरतों की मुसीबतों और शिकायतों ने जगह पाई है, यानी उन औरतों ने जिन्हें वस्तु में बदल दिया गया है, जो हाशिये पर जीती हैं, जिनसे घृणा जाता है, जिन्हें मारा-पीटा जाता

है, जिनका उपहास उड़ाया जाता है, जिन्हें ख़ामोश कर दिया जाता है. "संगे-सबूर" में अंततः वे अपनी बात कह पाई हैं."

"संगे-सबूर" का अंग्रेज़ी में अनुवाद The Patience Stone शीर्षक से पोली मैकलेन ने 2012 में किया. अतीक़ रहीमी के निर्देशन में 2012 में ही इस उपन्यास पर फ़िल्म भी बनी जिसमें मुख्य भूमिका ईरानी अभिनेत्री गुले-शेफ़्ता फ़राहानी ने निभाई है. इस फ़िल्म को Best Foreign Language Oscar की श्रेणी में अकादमी पुरस्कार के लिए अफ़ग़ानिस्तान की ओर से भेजा गया था, लेकिन चुनी नहीं गई.

अतीक़ रहीमी ने फ्रांसिसी टेलीविज़न के लिए डोक्यूमेंट्री और कमर्शियल फिल्में बनाई हैं. वह अफ़ग़ानिस्तान के एक बड़े मीडिया ग्रुप "मोबी ग्रुप" के साथ वरिष्ठ रचनात्मक सलाहकार के रूप में जुड़े हैं और उसके लिए विभिन्न कार्यक्रम तैयार करने के अतिरिक्त अफ़ग़ानिस्तान में फिल्म निर्माताओं और निर्देशकों की नई पीढ़ी को प्रशिक्षित करने में भी लगे हैं. टोलो टीवी के लिए उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान का पहला सोप-ओपेरा "राज़हा-ए ई-ख़ाना" तैयार किया जो बहुत लोकप्रिय हुआ और 2008 में उसने "सियोल ड्रामा पुरस्कार" का विशेष सम्मान प्राप्त किया.

उनकी अन्य रचनाओं में "ख़ाब और ख़ौफ़ के हज़ार कमरे" 2002 में फ़ारसी में, और अंग्रेज़ी में A Thousand Rooms of Dream and Fear शीर्षक से 2007 में प्रकाशित हुई, उनकी तीसरी रचना Le Retour Imaginaire (2005) थी. Snygue Sabour उनकी चौथी और फ्रांसीसी भाषा में पहली रचना थी. एक और उपन्यास A Curse on Dostoevsky फ्रांसिसी में 2011 में और अंग्रेजी में 2013 में प्रकाशित हुआ.

अतीक़ रहीमी अपना अधिकांश समय पेरिस और काबुल में बिताते हैं.

अर्जुमंद आरा
उर्दू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
ईमेल: ara.arjumand@gmail.com

अफ़ग़ानिस्तान में किसी जगह

या कहीं और...

संगे-सबूर